6 छटा भाग

आईए

नहजुल बलाग़ा

से सीखते हैं

(टाइम)

हुज्जतुल इस्लाम
जवाद मोहद्दिसी

ट्राँस्लेशन: अब्बास असग़र शबरेज़

आइए

नहजुल बलाग़ा

से सीखते हैं

(टाइम)

हुज्जतुल इस्लाम
जवाद मोहद्दिसी

ट्रांस्लेशन: अब्बास असग़र शबरेज़

किताब : आइए! नहजुल बलाग़ा से सीखते हैं (टाइम)

राइटर : हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी

ट्रांस्लेटर : अब्बास असग़र शबरेज़

पहला प्रिन्ट : फ़रवरी 2017

तादाद : 2000

पब्लिशर : ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ 9956620017

प्रेस : न्यु लाइन प्रोसेस, दिल्ली

क़ीमत : 25 रूपए
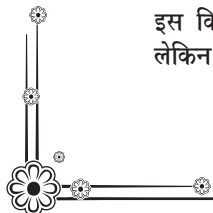
शहीद मुर्तज़ा मुतह्हरी

नहजुल बलाग़ा में इमाम अली[अ०] की ज़िंदगी की झलकियाँ साफ़ दिखाई पड़ती हैं। इमाम अली[अ०] का कलाम भी बिल्कुल उन्हीं के जैसा है क्योंकि कोई भी आदमी हो उसकी ज़बान से निकलने वाली बातें असल में उसकी रूह (आत्मा) से ही निकल रही होती हैं यानी उसकी बातें उसकी रूह और उसकी सोच का पता देती हैं। एक नीच रूह की बातें भी गिरी हुई ही होती हैं और एक महान रूह की बातें व सोच भी महान होती है। वन-डायमेंश्नल रूह का कलाम भी वन-डायमेंश्नल ही होता है और जिसकी रूह मल्टी-डायमेंश्नल होती है उसका कलाम भी मल्टी-डायमेंश्नल होता है। इस दुनिया में इमाम अली[अ०] एक ऐसी हस्ती का नाम है जिसमें किसी भी तरह की कोई कमी नहीं है इसलिए उनका कलाम भी ऐसा है जिसमें किसी भी हिसाब से कोई कमी नहीं है। उनके कलाम में इरफ़ान भी अपने सब से ऊँचे दर्जे पर पाया जाता है और फ़िलॉस्फ़ी भी, आज़ादी व जँग भी अपनी आख़िरी ऊँचाईयों पर दिखाई देती है तो अख़्लाक़ भी अपने आसमान पर दिखाई देता है।

इसलिए नहजुल बलाग़ा भी इमाम अली[अ०] की तरह हर हिसाब से एक ऐसी किताब है जिसमें किसी भी तरह की कोई कमी नहीं है।

contents

अपनी बात

वक़्त का आना जाना, दिन-रात का यह सिलसिला, हमारी उम्र और हमारी ज़िन्दगी से कम होने वाले पल, एक ऐसी सच्चाई है जिसे सब मानते हैं लेकिन इस सच्चाई को मानते हुए भी इन्सान इस पर ध्यान नहीं देता जिससे धीरे-धीरे उसकी यह दौलत बर्बाद होती जाती है और आख़िर में उसे एक बड़ा भारी नुक़सान उठाना पड़ता है।

हाथ आए टाइम को क़ीमती समझने पर उलमा ने बहुत ज़ोर दिया है। हमारे दीनी लिट्रेचर में भी इस पर बहुत कुछ कहा गया है।

दुनिया के कामयाब इन्सानों का यह भी कहना है कि आदमी अपनी उम्र से सही फ़ायदा तभी उठा सकता है जब उसे यह बात पता चल जाए कि टाइम उड़ जाने वाली चिड़िया का नाम है और जो टाइम हाथ से निकल गया वह दोबारा पलट कर आने वाला नहीं है।

जो किताब आपके हाथों में है इसमें कोशिश की गई है कि नेहजुल बलाग़ा में लिखी बातों को बिलकुल आसान ज़बान में अपने उन नौजवानों के सामने पेश किया जाए जो हज़रत अली[अ०] के कलाम को पढ़ना और समझना चाहते हैं।

यह किताब इस सिलसिले की छटी कड़ी है। इस किताब के अगले हिस्से भी इंशाअल्लाह जल्दी ही आपके सामने पेश किए जाएंगे ताकि हम अपने पालने वाले से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो सकें।

यह किताब आपके हाथों में है। इसे पढ़ने के बाद जो कमियाँ आपको नज़र आएं वह हमें ज़रूर बताईए ताकि अगले एडिशन में उन्हें दूर किया जा सके।

ताहा फ़ाउंडेशन
लखनऊ
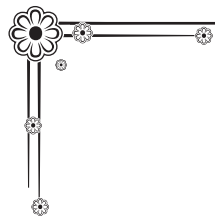
उम्र एक बहुत बड़ी पूँजी है

अपनी उम्र से सही फ़ाएदा उठाने की पहली शर्त यह है कि हम अपनी उम्र को एक दौलत या पूँजी समझें क्योंकि अगर हमारे पास पहले से पूँजी होगी तभी कुछ काम किया जा सकता है यानी अगर पहले से पूँजि होगी तभी अपने बिज़नेस को बढ़ाया जा सकता है और उस पूँजी से फ़ाएदा उठाया जा सकता है। कभी-कभी पूँजी से कुछ लोगों को नुक़सान भी उठाना पड़ जाता है। इन फ़ाएदों और नुक़सानों की बहुत सी वजहें होती हैं जिनमें काम करने के तरीक़े, तर्जुबे और अपनी धुन के पक्के होने का भी बहुत बड़ा हाथ होता है। कभी-कभी तो एक छोटी सी ग़लती की वजह से अपनी पूँजी से फ़ाएदा उठाने के बजाए नुक़सान हो जाता है।

कोई भी समाज हो वह तभी एक अच्छा समाज बन सकता है जब समाज का हर इन्सान अपनी उम्र व ज़िन्दगी को सही से इस्तेमाल कर रहा हो और इसे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाएदेमंद बना रहा हो।

हज़रत अली[अ०] जब भी मिंबर पर जाते थे तो ख़ुतबा शुरु करने से पहले लोगों को इस तरह ख़बरदार करते थेः

> ऐ लोगो! अल्लाह से डरो क्योंकि कोई भी आदमी बेकार पैदा नहीं किया गया है कि ऊट-पटाँग कामों में पड़ जाए और न ही उसे आज़ाद छोड़ दिया गया है कि बचकाना हरकतें करने लगे।[(1)]

हमारी उम्र, हमारी ज़िन्दगी और यह गोल्डन चांसेस हमारे
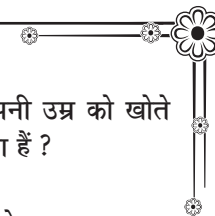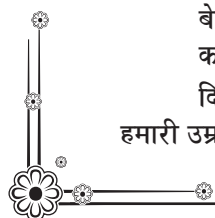
हाथ से छिनते रहते हैं और हम हर पल अपनी उम्र को खोते रहते हैं। सवाल यह है कि हम खोकर पाते क्या हैं ?

हज़रत इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> तुम में से कोई भी ज़िन्दगी पाने वाला तब तक अगले दिन में क़दम नहीं रखता जब तक कि उसकी ज़िन्दगी का एक दिन कम नहीं हो जाता।[(2)]

हर साँस के साथ हम अपने आख़िरी पड़ाव की तरफ़ एक क़दम और बढ़ जाते हैं और एक दिन उम्र की यह दौलत पूँजि अपनी आख़िरी साँस पर पहुँचकर ख़त्म हो जाती है।

अगर उम्र एक पूँजी है तो इसे फ़ायदेमंद बनाया जाना चाहिए। पूँजी को सिर्फ़ ख़र्च करते रहना कहीं से कहीं तक भी सही नहीं होता क्योंकि हमारी उम्र हमारे जिस्म की सवारी पर सवार है और अपने आख़िरी पड़ाव तक पहुँचने के लिए इस से काम लेना ज़रूरी है। अगर यह सुनहरे चांसेस, यह टाइम और यह रिर्सोसेस हमारी रूह की बुलन्दी के लिए सीढ़ी का काम न करें तो हम यह जंग हार जाएंगे।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> अपने जिस्मों को अपने ऊपर क़ुरबान कर दो और इस काम में कन्जूसी मत करो।[(3)]

हम में से हर एक बस अपनी ही चिन्ता में लगा हुआ होता है। उधर एक इन्सान बस अपने जिस्म के बारे में सोचता है और दूसरा सिर्फ़ अपनी रूह (आत्मा) के बारे में यानी एक जिस्म को सब कुछ समझ लेता है और दूसरा रूह को। अब सवाल यह है कि इन दोनों में सही कौन है ?

बहुत से लोगों को अपनी उम्र के आख़िर में इस बात का अफ़सोस रह जाता है कि उन्होंने अपनी ज़िन्दगी को गँवा दिया और अपनी उम्र उन चीज़ों में लगाकर बेकार कर दी जो किसी काम की नहीं थीं। यह ऐसे ही है जैसे कोई अपनी पूँजी को ऐसी जगह लगा दे जहाँ फ़ायदे के बजाए नुक़सान उठाना पड़े।

हज़रत अली[अ०] अपने एक ख़ुतबे में उन लोगों की हालत बता रहे हैं जो सब कुछ छोड़कर इस दुनिया से जा रहे होते हैं और अब जाकर उनकी आँख खुलती है, लेकिन कब ? उनकी
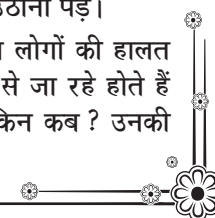
आँख तब खुलती है जब उनकी सारी ताक़तें ख़त्म हो चुकी होती हैं, अमानतें वापस ली जा चुकी होती हैं, वह अपने बच्चों और घर वालों के बीच हैं और सब कुछ देख और सुन रहे हैं लेकिन अब उन से कुछ बनने-बिगड़ने वाला नहीं है। अब इन हालात में पहुँच कर उनकी समझ में आता है कि उन्होनें तो अपनी पूरी उम्र ही बेकार कर दी है:

> आख़िर में जाकर इन्सान उन चीज़ों के बारे में सोचता है जिन में उसने अपनी उम्र गंवा दी और अपनी ज़िन्दगी बिता दी।[4]

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-370
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-143
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-181
4- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-107
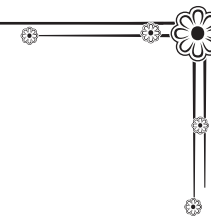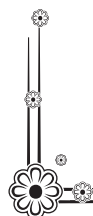
जवानी की बसन्त बुढ़ापे का पतझड़

अगर हम अपनी उम्र को साल के चार मौसमों यानी जाड़ा, गर्मी, बसन्त और पतझड़ की तरह मान लें तो बेशक जवानी बहार के मौसम की तरह होगी और बुढ़ापा पतझड़ की तरह। बहार के मौसम की उम्र कम होती है, इस ज़माने में पेड़-पौधों की हरियाली बड़ी तेज़ी के साथ पतझड़ में बदल जाती है और नेचर के चेहरे से हरियाली, ताज़गी और रौनक़ ख़त्म हो जाती है।

उम्र तेज़ी से गुज़रती जाती है, टाइम हाथ से निकलता है, जिस्म की ताक़त ख़त्म हो जाती है और जीत सिर्फ़ उस इन्सान की होती है जो अपनी जवानी के बदले बेहतरीन चीज़ें ख़रीद ले और अपनी ज़िन्दगी को फलदार बना ले।

नहजुल बलाग़ा में उम्र के तेज़ी से गुज़र जाने को कुछ इस तरह दिखाया गया है:

> दिन के अन्दर घड़ियाँ कितनी तेज़ हैं, महीनों के अन्दर दिन कितने तेज़ दौड़ रहे हैं, सालों के अन्दर महीने कितने सरपट भागे जा रहे हैं और उम्र के अन्दर साल तो थमते ही नहीं।[1]

एक दूसरी जगह पर इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया है:

> वक़्त की घड़ियाँ तेज़ बादल की तरह उड़ जाती हैं। इसलिए भलाई के मिले हुए चांसेस को अनमोल समझो।[2]

हमारी दुनिया और इस नेचर पर किसी का बस नहीं है।

इस दुनिया में शुरू से अभी तक यही चला आ रहा है और यही ख़ुदा का क़ानून भी है। इसी क़ानून को सामने रखते हुए हमें अपनी उम्र का हिसाब-किताब रखने और मिलने वाले चांसेस से भरपूर फ़ाएदा उठाना चाहिए और वह भी इस से पहले कि टाइम हाथ से निकल जाए और हम हाथ मलते रह जाएं। यह बात तय है कि जो भी अपनी उम्र को इधर-उधर बिता देगा उसे ज़िन्दगी के आख़िर में पछतावे से हटकर कुछ नहीं मिलेगा। ज़ाहिर सी बात है कि आख़िरी टाइम का पछतावा पिछली ज़िन्दगी के नुक़सान की भरपाई नहीं कर सकता।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> हाथ आए टाइम को अनमोल समझो इससे पहले कि वह किसी मुसीबत की वजह बन जाए।[3]

फिर फ़रमाते हैं:

> अफ़सोस! अगर ख़ुद इस नासमझ इन्सान की ज़िन्दगी ही इसके ख़िलाफ़ एक सुबूत बन जाए और इसकी ज़िन्दगी किसी ग़लत रास्ते पर जाकर ख़त्म हो।[4]

ज़िन्दगी में इन्सान जितना ज़्यादा अपने अंदर ध्यान देगा और जितना ज़्यादा अपने होने पर ध्यान देगा उतना ही वह इस भागती उम्र से फ़ाएदा उठा पाएगा और इस पूँजी को मुफ़्त में हाथ से नहीं जाने देगा।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> ऐ ख़ुदा के बन्दो! जान लो कि ख़ुदा ने तुम्हें बेकार नहीं पैदा किया है और तुम्हें आज़ाद नहीं छोड़ दिया है।

किसी ने कितनी अच्छी बात कही है:

> अफ़सोस कि इन्सान अपनी उम्र के पतझड़ के मौसम में जागता है और हाथ आया टाइम हाथ से निकल जाने के बाद सोचता है कि यह मैंने क्या किया ? मुझे क्या करना चाहिए था और अब इस टाइम मुझे क्या करना चाहिए ?
> मैंने कुछ न पूछा, किसी ने कहा भी नहीं। अच्छे-बुरे और मौत व ज़िन्दगी से अंजान बने

> रहकर जवानी खेलने-कूदने में निकल गई। इसके बाद भी मैं समझ न सका कि कैसे उम्र गुज़र गई। उम्र तो बेकार के कामों में चली गई। वह कैसी ताक़त थी जो मैंने मुफ़्त में गंवा दी। मैं समझ ही नहीं पाया और किसी ने कुछ कहा भी नहीं। जवानी की ताक़त मुझे ख़ुदा तक पहुँचा सकती थी लेकिन अफ़सोस कि जवानी मुफ़्त में बर्बाद हो गई।

अगर इन्सान इन बातों पर ध्यान देने लगे कि उसकी उम्र हाथ से निकलती जा रही है, क़यामत तेज़ी से पास आती जा रही है और वक़्त का मुँह इन्सान को फाड़ खाने, उसकी उम्र को ख़त्म करने और उसे निगल जाने के लिए खुला हुआ है तो अपने आप इन्सान की आँख खुल जाएगी। जब उसकी आँख खुलेगी तो वह अपनी उम्र के पतझड़ तक पहुँचने से पहले ही यानी जवानी की बहार में ही अपनी उम्र को सही कामों में लगाने की कोशिशें शुरु कर देगा और अपनी मौत के बाद के लिए सामान इकट्ठा करने में लग जाएगा।

हज़रत अली[अ०] ने अपने बड़े बेटे इमाम हसन[अ०] को एक बड़ा लम्बा ख़त लिखा था और उसमें अपनी उम्र के क़ीमती तजुर्बे बताते हुए यह बातें कही थीं:

> मैंने दुनिया के मुँह फेर लेने, ज़माने के हमलों और क़यामत के तेज़ी से अपनी तरफ़ आने से जो बातें समझी हैं उन्होंने मुझे दूसरों के बारे में सोचने और उनकी बात करने से रोक दिया है मगर जब सब लोगों की फ़िक्र (चिन्ता) से अलग होकर मैं अपनी फ़िक्र में पड़ा तो मेरी राये ने मुझे ख़्वाहिशों (इच्छाओं) से रोक दिया और सच्चाई मेरे सामने आ गई।[5]

क्या कहना उस इन्सान का जिसने अपनी जवानी की बहार अपनी मौत के बाद की तैयारी में सामान इकट्ठा करने में लगा दी हो।

मशहूर फ़ारसी शायर शेख़ सादी ने यहाँ इसी सच्चाई की तरफ़ इशारा किया है:

> उम्र अच्छी चीज़ है लेकिन अफ़सोस कि यह
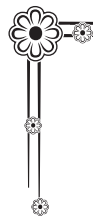
हमेशा बाक़ी रहने वाली नहीं है। इसलिए इस चार दिन की ज़िन्दगी और बहुत जल्दी ख़त्म हो जाने वाली चीज़ पर भरोसा करना अच्छी बात नहीं है।

यह उम्र एक ख़ुश्बूदार फूल तो है लेकिन जैसा कि तुम भी जानते हो कि यह एक ऐसा फूल है जो बहुत जल्दी मुरझा जाएगा।

ऐ मेरे दोस्त! इस दुनिया से अपना दिल मत लगा क्योंकि कोई भी कारवाँ किसी सराए को अपना घर नहीं बनाता है।

यहाँ तो जो भी आया उसने एक नया घर बनाया और फिर वह चला गया। जब वह चला गया तो यह घर किसी दूसरे को दे दिया गया।

1- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-188
2- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-21
3- ख़त-31
4- ख़ुतबा-64
5- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
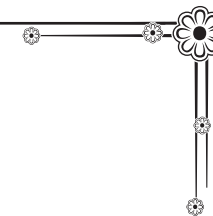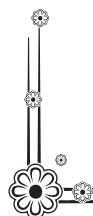
टाइम

हर काम का एक ख़ास टाइम होता है। इसलिए अपनी ज़िन्दगी का टाइम-टेबल बनाते वक़्त इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हर काम अपने सही टाइम पर किया जाए, न टाइम से पहले और न टाइम के बाद।

कभी-कभी ठहरकर इन्तेज़ार भी करना चाहिए ताकि जो काम करना है उसका सही टाइम आ जाए क्योंकि जल्दबाज़ी में किया जाने वाला कोई भी काम अपना सही रिज़ल्ट नहीं दे पाता। इसके उलट कभी-कभी हद से ज़्यादा इन्तेज़ार करना भी हाथ आया सुनहेरा चांस हम से छीन लेता है। किसी भी काम को आज-कल पर टालना सही टाइम के बर्बाद हो जाने की वजह भी बन जाता है।

हर काम में तेज़ी के मामले में हज़रत अली[अ०] की बार-बार नसीहत इस बात की तरफ़ इशारा है कि कोई भी काम हो, टाइम का रोल बहुत बड़ा होता है।

एक जगह इस बारे में हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> अच्छे काम करो। अभी जबकि आमाल (दुनिया में किए अच्छे काम) बुलन्द हो रहे हैं तौबा फ़ायदा दे सकती है क्योंकि पुकार सुनी जा रही है। हालात अच्छे और (फ़रिश्तों के) क़लम चल रहे हैं। कमज़ोरी व बुढ़ापे की तरफ़ पलटाने वाली उम्र, पैर की ज़ंजीर बन जाने वाली बीमारियाँ और झपट पड़ने वाली मौत से पहले अच्छे कामों की तरफ़ जल्दी करो।[1]

उम्र की क्वालिटी यह है कि यह हालात को तहस-नहस

कर देती है और बीमारी की ख़ास बात यह है कि वह इन्सान को काम व कोशिश से रोक देती है। इसी तरह मौत भी इन्सान से हर चांस छीन लेती है। इसलिए इस से पहले कि रास्ते बन्द हो जाएं सही वक़्त को पहचान कर फ़ाएदेमंद और सही काम करना ज़रूरी है।

क़यामत की तरफ़ हमारा यह तेज़ी से बढ़ता सफ़र और मौत की तरफ़ उठते हमारे क़दम भी हमें सही टाइम को पहचानने, इस सफ़र की तैयारी करने और रास्ते के लिए सामान इकट्ठा करने पर उभारते हैं।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> ख़ुदा तुम पर रहम करे! उन घरों की तरफ़ ध्यान देने में जल्दी करो जिन्हें बसाने का तुम्हें हुक्म दिया गया है।[(2)]

यानी हमें अपनी मौत के बाद की दुनिया को इसी दुनिया में आबाद करना है। जन्नत के महलों को बनाने का सामान इसी दुनिया से लेकर जाना है। अगर किसी ने इस सच्चाई की तरफ़ ध्यान नहीं दिया तो सही वक़्त हाथ से निकल जाने के बाद फिर कुछ भी करने की छूट नहीं मिल पाएगी।

शेख़ सादी ने इस सच्चाई की तरफ़ भी इशारा किया है:

> अगर तुम अपनी क़ब्र में आराम से रहने का सामान यहीं से भेजना चाहते हो तो अभी अपने ही हाथों से भेज दो क्योंकि तुम्हारे जाने के बाद यहाँ से भेजने वाला कोई नहीं है।

यहाँ एक बड़ा सवाल यह है कि इन्सान कब से अपनी रूह (आत्मा) को पाक करने का काम शुरु करे, कब से अपने बच्चों की परवरिश पर ध्यान दे और इल्म (नॉलेज) हासिल करने का सही टाइम क्या है...? यह सब वह सवाल हैं जो टाइम की सही पहचान से जुड़े हैं।

ख़ुद इमाम अली[अ०] अपने बेटे इमाम हसन[अ०] के नाम लिखे गये एक लम्बे ख़त में फ़रमाते हैं:

> ऐ बेटा! जब मैंने देखा कि मेरी उम्र अच्छी-ख़ासी हो गई है और हर आने वाले दिन के साथ मेरी कमज़ोरी बढ़ती जा रही है तो मैंने वसिय्यत करने में जल्दी की और इसमें कुछ ख़ास बातें लिख दी

> हैं कि कहीं ऐसा न हो कि मौत मेरे ऊपर झपट पड़े और दिल की बात दिल ही में रह जाए या बदन की तरह अक़्ल व समझ भी कमज़ोर पड़ जाए या मेरी वसिय्यत से पहले ही तुम्हारी दुनिया तुम्हें अपने कन्ट्रोल में कर ले या दुनिया के झमेले तुम्हें घेर लें और फिर तुम भड़क उठने वाले खतरनाक ऊँट की तरह हो जाओ क्योंकि कम उम्र इन्सान का दिल उस ख़ाली ज़मीन की तरह होता है जिसमें जो बीज डाल दो वही उग जाता है। इसलिए इससे पहले कि तुम्हारा दिल पत्थर हो जाए और तुम्हारा दिमाग़ दूसरी बातों में लग जाए, मैंने तुम्हें बताने और सिखाने के लिए अपना क़लम उठा लिया है।[(3)]

जवानी का टाइम ख़ुदा की बन्दगी करने, अच्छी बातें जानने और अपनाने, ख़ुदा को पसन्द आने वाले काम करने और गुनाहों को छोड़ने के लिए बहुत अच्छा टाइम है। इसलिए इस टाइम की वेल्यु को समझना चाहिए।

किसी शायर ने बड़ी अच्छी बात कही है:

> ऐ जवान! आज ही ख़ुदा के रास्ते पर चल पड़ो क्योंकि कल किसी बूढ़े की जवानी पलट कर वापस आने वाली नहीं है।

हमारी अक़्ल भी यही कहती है कि हर चीज़ और हर काम अपने सही टाइम पर ही किया जाना चाहिए।

हज़रत अली[अ०] मालिके अश्तर के नाम एक ख़त में यह हुक्म देते हैं:

> देखो। वक़्त से पहले किसी काम में जल्दी मत करना और जब सही वक़्त आ जाए तो फिर कमज़ोरी न दिखाना। जब सही हल समझ में न आए तो उस पर अड़ मत जाना और जब हल समझ में आ जाए तो फिर सुस्ती मत दिखाना। मतलब यह है कि हर चीज़ को उसकी जगह पर रखो और हर काम उसके सही वक़्त पर करो।[(4)]

अफ़सोस उस आदमी पर होता है जो काम के वक़्त पड़ा सोता रहे और जब उसकी आँख खुले तो कुछ करने का वक़्त

ही ख़त्म हो चुका हो।

मशहूर आलिम ख़्वाजा अब्दुल्लाह अंसारी कहते हैं:

> ऐ ख़ुदा! जब तक मेरे अन्दर ताक़त थी तब तक मैं कुछ समझ ही नहीं पाया था और अब जब समझ पा रहा हूँ तो ताक़त चली गई है।

1- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-227
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-186
3-नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
4- नहजुल बलाग़ा, ख़त-53
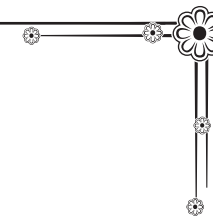
लम्बे-लम्बे ख़्वाब

ज़िन्दगी में अपना एक टाइम-टेबल बनाने, आगे के लिए प्लानिंग करने और आने वाले जगमगाते कल के लिए जहाँ दीन ने शौक़ दिलाया है वहीं लम्बी-लम्बी उम्मीदों और आने वाले कल के लिए लम्बे-लम्बे ख़्वाब देखने से रोका भी है।

ज़िन्दगी की सच्चाई को समझकर और इन्सानियत के अंदर रहकर ही इन्सान अपनी लम्बी-लम्बी उम्मीदों को एक सही बैलेंस दे सकता है। साथ ही लालच, लम्बी-लम्बी तमन्नाओं और बड़े-बड़े ख़्वाबों से भी बच सकता है।

अपनी कभी न ख़त्म न होने वाली उम्मीदों पर भरोसा और सच्चाई को अन्देखा करना या तो उम्र की पूँजी को बर्बाद कर देता है या उस पूँजी को ग़लत रास्ते पर ख़र्च करवाके आदमी को नाकाम बना देता है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> ख़बरदार! उम्मीदों के सहारे न बैठना क्योंकि उम्मीदें बेवक़ूफ़ों की पूँजी होती हैं।[1]

लम्बी-लम्बी उम्मीदें रखना उन लोगों का काम है जो मौत को भुला देते हैं और सोचते हैं कि जैसे उन्हें हमेशा इसी दुनिया में रहना है। अपनी इसी ग़लत सोच की वजह से उनके अंदर लम्बी-लम्बी और पूरी न हो सकने वाली उम्मीदें पैदा हो जाती हैं जिसका रिज़ल्ट यह होता है कि वह क़यामत को ही भूल बैठते हैं।

हज़रत अली[अ०] इस बारे में इस तरह फ़रमाते हैं:

> ऐ लोगो! मुझे तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा दो बातों का डर है। एक अपनी ख़्वाहिशों

(इच्छाओं) के पीछे-पीछे चलना और दूसरे उम्मीदों का बढ़ जाना। ख़्वाहिशों पर चलना वह फ़ैक्टर है जो हक़ से दूर कर देता है और उम्मीदों का बढ़ जाना क़यामत को भुला देता है।[2]

हज़रत अली[अ०] ने जो कुछ लम्बी-लम्बी उम्मीदों और मौत से दूरी के बारे में कहा है वह उन लोगों के लिए ख़तरे की घंटी है जो बेध्यानी में अपनी दुनिया को चमकाने या माल-दौलत इकट्ठा करने में एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश में लगे रहते हैं। साथ ही आने वाले कल के लिए अजीब-अजीब से ख़्वाब अपने दिमाग़ में बसाए रहते हैं जिसके बारे में पता ही नहीं है कि वह कल उन्हें मिलेगा भी या नहीं। ऐसे लोग अचानक देखते हैं कि मौत आ पहुँची है, सारे ख़्वाब चकनाचूर हो गए हैं, मेहनत से जमा किया हुआ माल उनके बच्चों को मिल गया है और ख़ुद उन्हें क़ब्र में उतार दिया गया है। ऐसे लोग अपनी ज़िन्दगी में सच्चाईयों से आँखें बंद किए रहते हैं इसलिए अब पछतावे से हटकर उनके हाथ कुछ नहीं आता। ऐसे लोग उन लोगों में गिने जाते हैं जो ज़िन्दगी की जँग हार चुके होते हैं।

हज़रत अली[अ०] पिछली कुछ क़ौमों की बर्बादी की वजह यह बताते हैंः

तुम से पहले वाले लोगों की बर्बादी की वजह यह है कि वह उम्मीदों के दामन फैलाए रहे और मौत को अंदेखा करते रहे। यहाँ तक कि जब वह मौत आ गई जिसका वादा पहले से किया जा चुका था तो उनका हर बहाना ठुकरा दिया गया और तौबा उठा ली गई और मुसीबत उन पर टूट पड़ी।[3]

लम्बी-लम्बी उम्मीदें गुनाहगार इन्सान को तौबा करने ही नहीं देतीं और वह सोचता रहता है कि अभी तो तौबा करने के लिए बहुत टाइम है लेकिन अचानक मौत इस तरह आ पहुँचती है कि तौबा करने का टाइम भी नहीं बचता।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

उन लोगों में से न हो जाना जो कुछ किए बिना ही अच्छे नतीजे की उम्मीद लगाए रहते हैं और उम्मीदें बढ़ाकर तौबा को आगे टालते रहते हैं।[4]
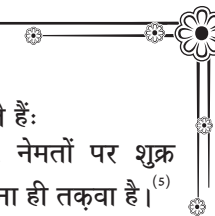
एक दूसरी जगह हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

ऐ लोगो! उम्मीदें कम रखना, नेमतों पर शुक्र करना और हराम चीज़ों से बचना ही तक़वा है।[5]

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं कि बुरे कामों की वजह लम्बी-लम्बी उम्मीदें होती हैंः

जिसने लम्बी-लम्बी उम्मीदें बाँध लीं उसने अपने आमाल (काम) बिगाड़ लिये।[6]

हज़रत अली[अ०] के ख़ुतबों में मौत व क़यामत से आँखें फेरने और लम्बी-लम्बी उम्मीदों के बीच एक साफ़ कनेक्शन दिखाई पड़ता है। ज़ाहिर सी बात है कि इन्सान अपनी हर उम्मीद पूरी नहीं कर सकता। ख़ुदा का क़ानून भी यह नहीं है कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी में अपनी हर उम्मीद पूरी कर ले। इसलिए इन्सान को अपनी उम्मीदों से धोखा नहीं खाना चाहिए बल्कि इस दुनिया की सच्चाई को समझकर अपनी ज़िन्दगी को आगे बढ़ाना चाहिए।

आइए! इस बारे में हज़रत अली[अ०] की कुछ हदीसों पर ध्यान देते हैंः

अगर कोई अपनी ज़िन्दगी और उसके अंजाम को देख ले तो उम्मीदों और उनके धोखों से मुँह मोड़ लेगा।[7]

यह बात सही से समझ लो कि तुम अपनी सारी उम्मीदें कभी पूरी नहीं कर सकते और जितनी ज़िन्दगी लेकर आए हो उस से भी आगे नहीं बढ़ सकते।[8]

तुम्हारे दिलों से मौत की याद निकल गई है और झूठी उम्मीदें तुम्हारे अन्दर भर गई हैं।[9]

क्या तुम उन्हीं पिछले लोगों के घरों में नहीं रहते जो लम्बी उम्रों वाले, पक्की निशानियों वाले और बड़ी-बड़ी उम्मीदें बाँधने वाले थे।[10]

इमाम अली[अ०] की यह सारी बातें यह बता रही हैं कि इन्सान को चाहिए कि वह बड़े मक़सद (Goal) तक पहुँचने के लिए अभी इसी वक़्त जो कुछ भी उसके हाथ में है उसी के सहारे
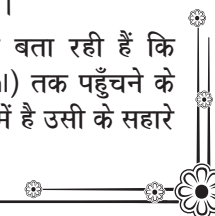
आगे बढ़े और इस रास्ते में अपनी सारी कोशिशें लगा दे। लेकिन अगर उसने लम्बी-लम्बी उम्मीदों और बड़े-बड़े ख़्वाबों के सहारे आगे बढ़ना चाहा तो कहीं नहीं पहुँच पाएगा।

1- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-42
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-147
4- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-150
5- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-79
6- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-36
7- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-334
8- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
9- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-113
10- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-11
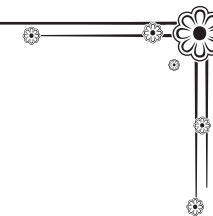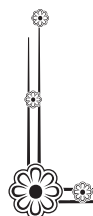
उम्र से फ़ाएदा उठाना

आदमी अपनी उम्र किन कामों में लगाता है और कैसे इस्तेमाल करता है, इसी से उम्र नाम की इस पूंजी के फ़ाएदेमंद होने या नुक़सानदेह होने का फ़ैसला भी हो जाता है। अपनी ज़िदंगी के मक़सद (Goal) को ध्यान में रखना, इस रास्ते पर क़दम बढ़ाना, अपनी हर सलाहियत (Quality) को अपने मक़सद तक पहुँचने के लिए इस्तेमाल करना और इस रास्ते की हर रुकावट को तोड़ते हुए आगे बढ़ते जाना वह बातें हैं जो इस पूँजी को बहुत क़ीमती बना देती हैं। यह बात तो हम सभी जानते हैं कि अगर इन्सान के पास कोई बड़ी पूँजी हो तभी उससे एक कामयाब बिज़नेस किया जा सकता है और कामयाबी या तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ा जा सकता है।

(1) मेहनत और कोशिश

अगर सुस्ती व काहिली हमारी उम्र के लिए एक बहुत बड़ी मुसीबत है तो इसके ठीक उलट कोशिश व मेहनत तरक़्क़ी की पहली सीढ़ी है।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

अब कोशिश करना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।[(1)]

एक दूसरी जगह इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

मेहनत के बिना इन्सान हक़ीक़त (Reality) तक नहीं पहुँच सकता।[(2)]

अगर किसी आदमी को इस बात का एहसास हो जाए कि

ज़िन्दगी और उम्र एक गुज़र जाने वाली चीज़ है तो वह ज़्यादा गम्भीरता से काम लेगा और फ़ालतू कामों से बहुत दूर रहेगा।

जिन लोगों को बड़े-बड़े काम करना होते हैं वह आराम भरी ज़िन्दगी, मज़ेदार खान-पान और दुनिया की चमक-दमक के पीछे नहीं दौड़ते क्योंकि यह सब चीज़ें एक उसूली (Systematic) ज़िन्दगी से मेल नहीं खाती हैं।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> बड़ी हिम्मत और दावतों का शौक़ एक साथ आगे नहीं बढ़ सकता। रात की गहरी नींद दिन के बड़े कामों में कमज़ोरी पैदा कर देती है।[3]

(2) टाइम-टेबल

अगर टाइम गुज़ारने और उम्र बिताने के लिए कोई सिस्टम या टाइम-टेबल न हो तो यह पूँजी बर्बाद हो जाएगी। अपने लिए एक टाइम-टेबल बनाने और उस पर चलने का सब से बड़ा फ़ाएदा यह होता है कि इन्सान अपने टाइम से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाएदा उठा लेता है।

अपनी ज़िन्दगी का एक टाइम-टेबल बनाने की इतनी वेल्यु है कि ख़ुद हज़रत अली[अ०] ने अपनी आख़िरी वसिय्यत में भी इसी चीज़ पर ज़ोर दिया था:

> अपने मामले ठीक रखना।[4]

एक दूसरी जगह इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> सब मामले तक़दीर के आगे झुक जाते हैं। यहाँ तक कि कभी तदबीर (Planning) के नतीजे में मौत भी हो जाती है।[5]

(3) तर्जुबों से फ़ाएदा उठाना

कहते हैं कि इन्सान को दो बार ज़िन्दगी मिलना चाहिए: एक बार तजुर्बे इकट्ठा करने के लिए और दूसरी बार उन तजुर्बों को काम में लाने के लिए।

लेकिन अगर कोई अपनी ज़िन्दगी में ही दूसरों के तजुर्बों से सीख ले ले और हर चीज़ का ख़ुद तजुर्बा न करना चाहे तो

समझ लीजिए कि उसने आधा रास्ता तैय कर लिया है क्योंकि उसने अपने तजुर्बों में दूसरों के तजुर्बों को भी मिला लिया है। अगर कोई इस रास्ते पर चल पड़े तो वह सही मायनी में अपनी उम्र को दोगुना कर लेता है जिससे उसका टाइम बहुत ज़्यादा फैल जाता है।

नहजुल बलाग़ा में भी दूसरों के हालात और तजुर्बों से सीख लेने पर बड़ा ज़ोर दिया गया है। ख़ुद हज़रत अली[अ०] ने भी अपने तजुर्बों को समाज के दूसरे लोगों, ख़ासकर अपने बेटों तक पहुँचाने की पूरी कोशिश की थी। अपने बच्चों तक अपने तजुर्बे पहुँचाने का खुला नमूना इमाम हसन[अ०] के नाम इमाम अली[अ०] की आख़िरी वसिय्यत है जिसमें इमाम[अ०] फ़रमाते हैं:

> ऐ बेटा! यूँ तो मैंने उतनी उम्र नहीं पाई है जितनी अगले लोगों की हुआ करती थी, फिर भी मैंने उनके रहन-सहन को देखा, उनके हालात पर ध्यान दिया और उनके छोड़े हुए निशानों में घूमा-फिरा। यहाँ तक कि जैसे मैं भी उन्हीं में का एक हो चुका हूँ बल्कि उन सब के हालात व जानकारियाँ जो मुझ तक पहुँची हैं उनकी वजह से ऐसा है जैसे मैंने उनके पहले से लेकर आख़िर तक के साथ ज़िन्दगी बिताई है। इस तरह मैंने साफ़ को गंदे से और फ़ाएदे को नुक़सान से अलग करके पहचान लिया है और अब सबका निचोड़ तुम्हारे सामने रख रहा हूँ। मैंने अच्छाईयों को चुनकर तुम्हारे लिए समेट दिया है और फ़ालतू चीज़ों को तुम से दूर कर दिया है। मुझे तुम्हारी हर बात का उतना ही ध्यान है जितना एक मेहरबान बाप को होना चाहिए।[6]

इसी वसिय्यत में आगे चलकर इमाम फ़रमाते हैं:

> इससे पहले कि तुम्हारा दिल पत्थर हो जाए और तुम्हारा दिमाग़ दूसरी बातों में लग जाए, मैंने तुम्हें सिखाने और बताने में पहल कर दी है ताकि तुम अच्छी तरह अपनी समझ के ज़रिये उन चीज़ों को अपनाने के लिए तैयार हो जाओ जिनके इम्तेहान और तजुर्बे की कठिनाईयों से तजुर्बेकारों ने तुम्हें

बचा लिया है। इस तरह तुम ढूँढने की परेशानी और तजुर्बे की उलझनों से बच जाओगे। अब तजुर्बे व नॉलेज की वह बातें आसानी से तुम तक पहुँच रही हैं जिनको मैंने अपनी पूरी ज़िन्दगी लगाकर इकट्ठा किया है और फिर वह चीज़ें भी निखरकर तुम्हारे सामने आ रही हैं जिनमें से हो सकता है कि कुछ मेरी आँखों से ओझल हो गई हों।(7)

हज़रत अली[अ०] इस बारे में फ़रमाते हैंः

तजुर्बों को सँभाल कर रखना समझदारी है।(8)

हज़रत अली[अ०] ने अपनी हुकूमत में काम करने वालों को हर काम में तजुर्बेकार लोगों के तजुर्बों से फ़ाएदा उठाने का हुक्म दे रखा थाः

ऐसे लोगों को चुनना जो तजुर्बेकार हों।(9)

यहाँ तक कि हज़रत अली[अ०] ने तजुर्बों को संभाल कर रखने को एक तरह से ख़ुदा की मदद बताया हैः

तजुर्बों... को सँभाल कर रखना ख़ुदा की तरफ़ से मिलने वाली मदद होती है।(10)

अगर इन्सान अपनी कुछ उम्र दूसरों के तजुर्बे इकट्ठा करने में बिता दे तब भी यूँ समझिए कि उसने बिल्कुल नुक़सान नहीं उठाया है क्योंकि यह तजुर्बे लोगों को एक पूरी उम्र लगाने के बाद ही हाथ आते हैं। इतना ही नहीं बल्कि कामयाबी व नाकामी का मज़ा चखने के बाद ही तजुर्बे मिलते हैं।

(4) बुरे लोगों से दूर रहना

बुरा साथी इन्सान की उम्र को बर्बाद कर देता है। ग़लत लोगों से दोस्ती अख़लाक़ व किरदार (Morals and Charachter) को भी ख़राब कर देती है और हाथ आए अच्छे मौक़े भी छीन लेती है। उधर दूसरे लोग जब किसी के बारे में कोई फ़ैसला या राये बनाते हैं तो वह भी उसके दोस्तों को देखकर ही बनाते हैं।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

इन्सान को उसके साथी से पहचाना जाता है।(11)
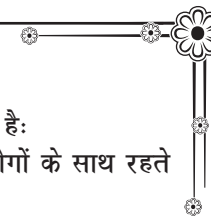
किसी शायर ने कितनी अच्छी बात कही हैः

तुम पहले यह बताओ कि तुम किन लोगों के साथ रहते हो, फिर मैं बता दूँगा कि तुम कौन हो।

इमाम अली[अ०] ने नहजुल बलाग़ा में कुछ दोस्तियों और कुछ दोस्तों से ख़बरदार रहने को कहा है ताकि इन्सान की उम्र की पूँजी बुरे दोस्तों की वजह से बर्बाद न हो जाए। इमाम फ़रमाते हैंः

बेवक़ूफ़ के साथ मत उठा-बैठा करो क्योंकि वह तुम्हारे सामने अपने कामों को सजा कर पेश करेगा और चाहेगा कि तुम भी उस के ही जैसे हो जाओ।(12)

साथ ही हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

उस आदमी के साथ रहने-सहने से बचो जिसकी राये कमज़ोर और काम बुरे हों।(13)

दूसरी तरफ़ इमाम अली[अ०] ख़ुदा से मोहब्बत करने वाले लोगों से दोस्ती करने का हुक्म भी देते हैं क्योंकि यह दोस्ती इन्सान को अल्लाह वाला बना देती है। इमाम फ़रमाते हैंः

अल्लाह के दोस्तों से दोस्ती करो।(14)

इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने लिए अच्छे दोस्त चुनें ऐसे दोस्त जो समझदार और अक़्लमंद भी हों। अच्छे दोस्त, इन्सान को अच्छाईयों के रास्ते पर ले जाते हैं और कामयाबी तक पहुँचने में मदद देते हैं, लेकिन बुरे दोस्त उम्र को बर्बाद, जवानी को बेकार और ज़िन्दगी को भद्दा बना देते हैं।

1- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-230, 2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-29, 3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-238, 4- नहजुल बलाग़ा, ख़त-47, 5- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-15, 6- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31, 7- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31, 8- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31, 9- नहजुल बलाग़ा, ख़त-53, 10- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-211, 11- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69, 12- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-293, 13- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69, 14- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69

उम्र का हिसाब-किताब

बिज़नेस करने वाले और दुकानदार हमेशा अपनी आमदनी व ख़र्च, फ़ाएदे व नुक़सान और क्या दिया-क्या हाथ आया का पूरा-पूरा हिसाब रखते हैं। अगर वह ऐसा न करें तो उनका दिवाला निकल जाए और सारी पूँजी हाथ से चली जाए।

हमारी उम्र फलों की एक टोकरी, अनाज की एक बोरी, कपड़े के एक थान या किसी दुकान में रखी चीज़ों से कहीं ज़्यादा अनमोल है। इसलिए हमें सदा इस बात का ध्यान होना चाहिए कि हमें अपनी उम्र कैसे और किन चीज़ों में लगाना है। हमें यह भी पता होना चाहिए कि वह कौन सा रास्ता है जिस पर चलकर टाइम को सबसे फ़ायदेमन्द चीज़ों और सबसे अच्छे कामों में लगाया जा सकता है।

इस से पहले कि हम से क़यामत में हिसाब लिया जाए हमें ख़ुद ही अपनी उम्र का हिसाब-किताब लेते रहना चाहिए जिसके लिए हमें अपने कामों, अपने टाइम और अपनी ज़िन्दगी का बहुत गहराई के साथ ध्यान रखना होगा।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> अल्लाह के बन्दो! इससे पहले कि दूसरे तुम्हें तौलें तुम ही अपने आप को तौल लो और इससे पहले कि दूसरे तुम्हारा हिसाब-किताब करें तुम ही अपना हिसाब-किताब कर लो।[1]

हम अपनी उम्र, अपने टाइम और अपनी ज़िन्दगी के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं और एक दिन इन सब चीज़ों के बारे में हम से सवाल किया जाएगा।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> जो अपना हिसाब-किताब ख़ुद ही करता रहता है वह फ़ायदे में रहता है और जो सोया रहता है वह घाटे में रहता है।[2]

हमें रोज़ाना रात में सोने से पहले अपने दिन भर के कामों का हिसाब-किताब ज़रूर करना चाहिए ताकि हम अपनी ज़िन्दगी की ग़ल्तियों, कमियों, कमज़ोरियों और नुक़सानों को अच्छे ढँग से समझ सकें और समझने के बाद हर उस काम से दूर रहें जो हमें हमारे रास्ते से भटकाने वाला हो।

हम ज़माने व टाइम के साथ हर पल लेन-देन कर रहे हैं यानि हम अपनी उम्र, जवानी, एनर्जी और सेहत देते जा रहे हैं लेकिन इस सब के बदले में हमें कुछ मिलता भी है, या फ़ाएदा या नुक़सान ? हम फ़ायदे में हैं या घाटे में, कामयाबी की तरफ़ बढ़ रहे हैं या नाकामी की तरफ़ ? तरक़्क़ी की तरफ़ जा रहे हैं या नीचे की तरफ़ आ रहे हैं ? उम्र की यह पूँजी आख़िर किस चीज़ पर ख़र्च हो रही है ? यह सब बातें हमें पता होना चाहिएं।

ज़िन्दगी एक तरह की खेती है। इसलिए हमें ज़िन्दगी की आख़िरी साँसों में देखना होगा कि हमें अपनी उम्र की इस खेती से क्या फल मिला है ?

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> जो बोओगे वही काटोगे।[3]

अपनी उम्र और ज़िन्दगी का हिसाब-किताब रखने से बाद के नुक़सानों को भी रोका जा सकता है। कोई भी आदमी मीठे और साफ़ पानी को बंजर ज़मीन में डाल कर बर्बाद नहीं करता है। अपनी उम्र को बेकारी में बिताने का यही मतलब है कि मीठे और साफ़ पानी को बंजर ज़मीन में बहाकर बर्बाद कर दिया जाए।

इसके उलट अपनी उम्र को सही कामों में लगाने का मतलब यह है कि मीठे व साफ़ पानी से इस फल-फूल से भरे बाग़ को सींच दिया जाए। जो आदमी अपनी उम्र का कोई हिसाब-किताब न रखता हो उसे तभी अपनी हार का अन्दाज़ा लग पाता है जब टाइम निकल चुका होता है। अब पछतावे के साथ वह कहता है कि हाय! अपनी उम्र के हाथ से निकल जाने के बाद मुझे इस बात का मतलब समझ में आया है कि मेरी उम्र

के यह तीन दिन किस तरह बर्बाद हो गये...

- खेलों में बिताया हुआ बचपन
- बेकार जवानी
- और पछतावे भरा बुढ़ापा।

इमाम अली[अ०] नहजुल बलाग़ा में अल्लाह वालों की तारीफ़ करते हुए फ़रमाते हैं :

> वह अपने आमाल नामे खोले हुए हैं और अपने हर छोटे-बड़े काम का हिसाब कर रहे हैं।[4]

अगर ऐसा न हो तो यह लोग भी उन लोगों की तरह हो जाएंगे जो अपने आख़िरी वक़्त में देखते हैं कि उनकी उम्र दो हिस्सों में बंट चुकी हैः पहला आधा हिस्सा दूसरे आधे हिस्से की उम्मीद में और दूसरा आधा हिस्सा पहले आधे हिस्से के पछतावे में।

हिसाब-किताब हर चीज़ में ज़रूरी भी है और फ़ाएदेमंद भी, ख़ासकर उम्र और ज़िन्दगी की इस अनमोल पूँजी में यह हिसाब-किताब कहीं ज़्यादा ज़रूरी और फ़ाएदेमंद होता है।

1- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-90
2- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-208
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-151
4- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-219

इस रास्ते में आने वाले ख़तरे

सही कहा गया है कि बीमारी को समझ लेना आधा इलाज होता है और यह भी सही है कि अगर किसी चीज़ के रास्ते में आने वाले ख़तरों को पहचान लिया जाए तो उस रास्ते से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाएदा उठाया जा सकता है। साथ ही अन्देखे नुक़सानों से भी बचा जा सकता है।

हमारी उम्र और हमारी जवानी के रास्ते में आने वाले ख़तरे क्या हैं? हम इस सवाल का जवाब हज़रत अली[अ०] से सीखते हैं क्योंकि वह इस रास्ते को सबसे अच्छी तरह पहचानते हैं। इस बारे में इमाम अली[अ०] ने बहुत सी बातें कही हैं जिनमें से कुछ यह हैंः

(1) काहिली और सुस्ती

उमंगें और जोश न हो तो हर काम में नुक़सान होता है चाहे पढ़ना-पढ़ाना हो या इबादत या कोई और काम।

मासूमीन[अ०] की हदीसों में सुस्ती जैसे शब्दों से इस ख़तरे के बारे में बताया गया है। दुआए अबू हमज़ा सुमाली में इमाम सज्जाद[अ०] ने सुस्ती से बचने की दुआ माँगी है। दुआए मकारिमुल अख़्लाक़ में भी है कि ऐ ख़ुदा! इबादत में काहिली और सुस्ती जैसी हालत से हमें दूर रख!

नहजुल बलाग़ा के एक ख़ुतबे में हज़रत अली[अ०] हम इन्सानों को ख़बरदार करते हुए फ़रमाते हैंः

> तुम्हारे अंदर जो काहिली और सुस्ती जैसी बीमारी है उसका इलाज मज़बूत इरादे से किया
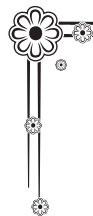
करो और अपनी आँखों पर पड़े पर्दों को आँखें खोलकर हटा दो। होशियारी के पानी के कुछ चुल्लू अपने चेहरे पर मारो और अपनी नींद को अपनी आँखों में ही तोड़ दो।

(2) रास्ते को भूल जाना

जब ज़िन्दगी का अपना एक क़ानून व सिस्टम है और इन्सान इस रास्ते में कोशिश कर रहा है तो कहीं पर रुक जाना या ग़लत रास्ते पर चलना या रास्ता दिखाने वाले के बिना रास्ता तय करना या जिस रास्ते के आगे कोई रास्ता न हो वहाँ तक पहुँच जाना या अपनी आख़िरी मंज़िल यानि आख़िरत (Hereafter) को भूल जाना... यह सब रास्ते से भटक जाने की निशानियाँ हैं और यही ज़िन्दगी के लिए सबसे बड़ा ख़तरा है।

इमाम अली[अ०] इस हालत की बुराई करते हुए फ़रमाते हैं:

> लोगों में सबसे ज़्यादा नापसन्द अल्लाह के लिए वह बन्दा है जिसे अल्लाह ने उसके हाल पर छोड़ दिया है। इस तरह कि वह सीधे रास्ते से हटा हुआ और बिना रास्ता दिखाने वाले के चल रहा हो। अगर उसे दुनिया की खेती के लिए बुलाया जाता है तो बड़ा जोश दिखाता है और अगर आख़िरत की खेती करने के लिए कहा जाता है तो काहिली करने लगता है।[2]

(3) फ़ालतू कामों में उम्र बिता देना

हम समझते हैं कि दुनिया एक खेल का मैदान है जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। कामयाब लोग वह हैं जो ज़िन्दगी को गम्भीरता से लेते हैं, ख़ुद अपने आप को ही अपनी तरक़्क़ी व कामयाबी का ज़िम्मेदार समझते हैं और इज़्ज़त के साथ अपनी सारी सलाहियतों (Abilities) को काम में लाते हुए आगे बढ़ते हैं। कुछ लोग जानवरों जैसी ज़िन्दगी बिताते हैं और अपनी पूरी ज़िन्दगी बस मज़े लूटने में लगा देते हैं।

इमाम अली[अ०] ज़िन्दगी के बारे में इस तरह की सोच को
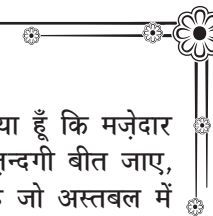
बुरा कहते हुए फ़रमाते हैं:

> मैं इसलिए पैदा नहीं किया गया हूँ कि मज़ेदार खान-पान में ही मेरी सारी ज़िन्दगी बीत जाए, बिल्कुल उस जानवर की तरह जो अस्तबल में बंधा होता है जिसका काम बस खाना होता है या फिर उस जानवर की तरह जिसे जँगल में छोड़ दिया गया हो जिसका काम बस चरना और पेट भरना होता है। उसे पता ही नहीं होता कि वह जी क्यों रहा है। मुझे इसलिए पैदा नहीं किया गया है कि मैं अपनी ज़िन्दगी फ़ालतू कामों में लगाकर बर्बाद कर दूँ।
>
> मुझे इसलिए पैदा किया गया है ताकि मैं अपने मज़बूत इरादे के साथ दुनिया की चाहतों से आज़ाद हो जाऊँ। दुनियावी ख़्वाहिशों, लालच, तमन्नाओं, जलन, दुश्मनी और कन्जूसी जैसी बातों से दूर रहकर सच्चाई को ढूँढू, दूसरों को सही रास्ते पर लाऊँ और अपनी रौशनी से सबको रास्ता दिखाऊँ चाहे ख़ुद जल जाऊँ...।

(4) मौज-मस्ती

एक दूसरा ख़तरा जवानी को मौज-मस्ती में लगा देना और अपनी ज़िन्दगी में किसी भी तरह की कोशिश से जी चुराना है।

कुछ लोग माल-दौलत में मस्त होते हैं, कुछ ताक़त व हुकूमत में और कुछ जवानी की मौज-मस्ती में। जो आदमी मगन होता है वह न तो अपने रास्ते को ही पहचान पाता है, न उसके पास कुछ कर पाने और फ़ैसले लेने की ताक़त होती है, न वह कोई समझदारी की बात सुन पाता है और न ही उसके काम समझदारी भरे होते हैं। ऐसे आदमी को आख़िर में पछतावे और बदनामी से हटकर कुछ भी नहीं मिलता।

हज़रत अली[अ०] इस बारे में इस तरह फ़रमाते हैं:

> ऐ सुनने वालो! अपनी मौज-मस्तियों से होश में आ जाओ और बन्द आँखें खोल लो।[4]

इसी ख़ुतबे में आगे चलकर इमाम अली[अ०] हम इन्सानों से

कहते हैंः

> अपने आने वाले कल पर नज़र रखो, घमन्ड से दूर रहो, क़ब्र व क़यामत को याद करो और जान लो कि तुम जो कुछ बोओगे वही काटोगे और जो कुछ आज यहाँ से आने वाली क़यामत के लिए भेजोगे वहाँ बस वही पाओगे, उससे हटकर वहाँ कुछ नहीं मिलेगा। ऐ सुनने वालो! होशियार, होशियार और सोने वालो! काम और कोशिश, काम और कोशिश।

सच्ची बात यह है कि जो आदमी समझदार व होशियार होता है बस वही वक़्त का ज़्यादा ध्यान रखता है।

ख़तरे तो इस से कहीं ज़्यादा हैं। जो कुछ ऊपर लिखा गया है वह तो सिर्फ़ कुछ नमूने थे ताकि इस रास्ते पर चलने वाला अपनी आँखें खोलकर अपना रास्ता तय करे और ख़ुद को हर आने वाले ख़तरे से बचाए रखे।

1- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-101
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-153

गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं

ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जो उम्र के हाथ से निकल जाने के बाद बहुत पछताते हैं लेकिन आख़िरी वक़्त का यह पछतावा हाथ से निकल चुकी उम्र को तो वापस नहीं ला सकता मगर जो होशियार होता है वह अपनी उम्र से सही फ़ायदा उठाते हुए उसे ख़ुदा के बताए रास्ते में लगा देता है।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> लेन-देन में सबसे ज़्यादा घाटा उठाने वाला और दौड़धूप में सबसे ज़्यादा नाकाम होने वाला वह आदमी है जिसने माल की चाहत में अपने बदन को थका डाला हो मगर तक़दीर (भाग्य) ने उसके फ़ैसलों में उसका साथ न दिया हो। इसलिए ऐसा आदमी दुनिया से हाथ मलता हुआ जाता है और क़यामत में भी उसे कुछ नहीं मिल पाएगा।[1]

जिस आदमी के लिए कुछ करने का मौक़ा हो लेकिन वह उस मौक़े से फ़ायदा न उठाए तो यही उम्र उसके ख़िलाफ़ क़यामत में खड़ी हो जाएगी जिसके बाद ऐसा आदमी ख़ुद अपने आप से भी शर्मिंदा होगा और अपने पालने वाले से भी। ज़ाहिर है कि यह सब उम्र की बर्बादी की वजह से ही हो रहा होगा।

इमाम अली[अ०] नहजुल बलाग़ा के एक ख़ुतबे में लोगों को अच्छे कामों की तरफ़ बुलाते हुए एक बहुत अच्छी नसीहत करते हैंः

> अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो और मौत से पहले अपने आमाल (काम) इकट्ठा कर लो।

दुनिया की ख़त्म हो जाने वाली चीज़ें देकर बची रह जाने वाली चीज़ें ख़रीद लो। चलने का सामान तैयार करो क्योंकि तुम्हें तेज़ी से ले जाया जा रहा है और मौत के लिए तैयार हो जाओ क्योंकि वह तुम्हारे सरों पर मंडला रही है। तुम्हें ऐसा होना चाहिए जिन्हें पुकारा जाए तो जाग उठें और यह जानने के बाद कि दुनिया उनका घर नहीं है उसे क़यामत से बदल लें क्योंकि अल्लाह ने तुम्हें बेकार पैदा नहीं किया है और न ही उस ने तुम्हें दुनिया में आज़ाद छोड़ दिया है। मौत तुम्हारे रास्ते में रूकावट बनी खड़ी है। मौत के आते ही तुम्हारे लिए या तो जन्नत है या जहन्नम। इस दुनिया में जीने के लिए जो वक़्त तुम्हें दिया गया है वह बहुत कम है क्योंकि हर बीतने वाला पल कम होता जा रहा है और हर बीतने वाला पल इस इमारत (बिल्डिंग) को ढाता जा रहा है। और वह मौत जिसे दिन-रात ढकेल कर आगे ले जाया जा रहा हो, उसे बहुत जल्दी आने वाला समझना चाहिए और वह आदमी जिसके सामने कामयाबी या नाकामी आने वाली है उसे इस सफ़र के लिए अच्छे से अच्छा सामान इकट्ठा कर ही लेना चाहिए। उसे अपने लिए बेहतरीन से बेहतरीन सामान अभी से इकट्ठा कर लेना चाहिए। इस दुनिया में रहते हुए ही क़यामत के इस सफ़र के लिए इतना सामान इकट्ठा कर लो कि कल अपने आप को बचा सको जिसका तरीक़ा यह है कि बन्दा अपने अल्लाह से डरे। ....मरने से पहले तौबा करे और चाहतों को अपने कंट्रोल में रखे क्योंकि मौत उसकी आंखों से ओझल है और उम्मीदें धोखा देने वाली हैं और शैतान उस पर छाया हुआ है जो गुनाहों को सजाकर उसके सामने लाता है कि आदमी गुनाहों में डूब जाए और तौबा की ढारस बंधाता रहता है कि अभी जल्दी ही क्या है, बाद में तोबा कर लेना। यहाँ
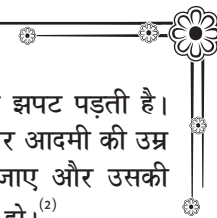
तक कि मौत अचानक उस पर झपट पड़ती है। कितने अफ़सोस की बात है अगर आदमी की उम्र ही उसके ख़िलाफ़ सुबूत बन जाए और उसकी ज़िंदगी बड़ी बुरी हालत में ख़त्म हो।[2]

जवानी हाथ से निकल चुकी एक ऐसी चीज़ है जिसे बूढ़े अपनी आख़िरी उम्र में ढूँढते फिरते हैं और यह उन्हें कहीं नहीं मिलती। जवानी एक ऐसी बहार है जो ख़त्म होकर पतझड़ में बदल जाती है और सिर्फ़ उसकी याद दिलों में बाक़ी रह जाती है और वह भी पछतावे भरी याद।

किसी शायर ने कहा हैः

मैं यूनान में किसी जगह पर गया तो मैंने वहाँ एक बूढ़े को देखा जो कमज़ोरी और बुढ़ापे की वजह से ज़मीन पर झुका पड़ा था। मैंने पूछा कि यहाँ आपका क्या खो गया है ?

उसने कहाः जवानी, जवानी, जवानी।

उम्र का वही हिस्सा सही मायनी में उम्र में गिना जाता है जिसमें आदमी कुछ करने की ताक़त रखता है यानी वह उम्र जो इन्सान के अपने लिए और समाज के लिए फ़ाएदेमंद होती है। अगर ऐसा न हो तो फिर घाटा ही घाटा है, घाटे से हटकर कुछ भी नहीं है।

किसी ने बड़ी अच्छी बात कही है कि जिस दिन तुम ने कोई काम न किया हो उस दिन को अपनी उम्र में मत गिना करो।

इमाम अली[अ०] इसी सच्चाई को बयान करते हुए फ़रमाते हैं:

याद रखो कि दुनिया इम्तेहानों की जगह है। जो भी दुनिया में अपना कोई वक़्त बेकारी में बिताएगा उसके लिए क़यामत के दिन वही बेकारी एक बहुत बड़ा पछतावा बन जाएगी।[3]

उम्र के आख़िरी पड़ाव में जाकर इन्सान को जवानी की खोई हुई ज़िन्दगी पर पछतावा होता है और क़यामत में भी उसे इस बात पर पछतावा होगा कि उसने दुनिया में अपनी सारी ज़िन्दगी बर्बाद कर दी थी। लेकिन वहाँ न तो बूढ़े जवान हो सकेंगे और न ही मुर्दे दुनिया में पलट कर वापस आ सकेंगे

क्योंकि क़यामत हिसाब-किताब की जगह है, कुछ करने की जगह नहीं है।

इमाम अली[अ०] एक जगह फ़रमाते हैं:

> अफ़सोस! जवानी का ख़ूबसूरत ज़माना, ज़िन्दगी की रंगीनियाँ, अच्छी-भली सूरत और ख़ूबसूरती... यह सब अच्छी चीज़ें कहाँ गईं और कहाँ गईं वह सारी मोहब्बतें, कहाँ गई वह सारी ताक़त और कहाँ गया वह बेहतरीन वक़्त ?

उलमा और अल्लाह के नेक बन्दे अपनी उम्र के आख़िरी वक़्त में अफ़सोस भरी ज़बान से अपनी पिछली उम्र के बारे में बात करते दिखाई पड़ते हैं। ख़ुद यह भी उनके दिल के ज़िन्दा होने की निशानी है वरना दुनिया से धोखा खाए न जाने ऐसे कितने लोग हैं जो बुढ़ापे में भी बेख़बर सोए रहते हैं जिन्हें अपने नुक़सान का अन्दाज़ा तक नहीं हो पाता।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-430
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-62
3- नहजुल बलाग़ा, ख़त-59

सबसे ख़तरनाक हालत

मौत हर हाल में आएगी। दुनिया में मौत जैसी शायद दूसरी कोई चीज़ नहीं है और इसकी तैयारी हर इन्सान को करना है।

क़ुरआने करीम में है:

> हर एक को मौत का मज़ा चखना है।[1]

ताज्जुब की बात यह है कि इसके बावजूद इन्सान जितना मौत को भूल जाता है उतना किसी दूसरी चीज़ को नहीं भूलता। इन्सान रोज़ाना ही किसी न किसी को मरते हुए देखता है, कोई इन्सान अपनी नेचुरल मौत मर जाता है तो कोई किसी बीमारी की वजह से मर जाता है, कोई बूढ़ापे की वजह से तो किसी का हार्ट अटेक हो जाता है, किसी का एक्सीडेंट हो जाता है तो किसी का क़त्ल हो जाता है तो कोई भूकम्प से मर जाता है यानी मरने के हज़ार रास्ते हैं और इन्सान यह सब कुछ अपनी आँखों से देखता रहता है मगर सीखता-समझता कुछ नहीं जबकि मौत सबको आना है और सबको यहाँ से जाना है।

ताज्जुब की बात यह भी है कि ज़्यादातर मौतें अचानक होती हैं। कोई नहीं जानता कि किस वक़्त, कहाँ और किस तरह से मौत आएगी। अगर सिर्फ़ इसी बात की तरफ़ इन्सान का ध्यान चला जाए तो उसके अन्दर हर पल अपनी उम्र का हिसाब-किताब रखने की आदत पड़ जाएगी और वह हमेशा मौत के लिए तैयार रहेगा।

जब हमें आने वाले मिनट या सेकेंड की ख़बर ही नहीं है तो हमें अपनी उम्र को इस तरह से बेध्यानी में नहीं बिताना चाहिए। वह लोग जो सिर्फ़ इसी दुनिया की ज़िन्दगी के बारे

सोचते हैं और इसी में डूबे रहना चाहते हैं और कहते हैं कि जब बुढ़ापा आएगा तब तौबा और नमाज़-रोज़ा कर लेंगे उनसे कोई पूछे कि भला आप तब तक ज़िन्दा भी रहेंगे? क्या ख़ुदा ऐसे लोगों से कोई वादा कर लेता है या उन्हें कुछ लिखकर दे देता है कि सत्तर साल के होने के बाद ही तुम्हें मौत आएगी?!

किसी शायर ने कहा हैः

> तुम कितना कहते हो कि जब बूढ़ा हो जाऊँगा तब तौबा कर लूँगा लेकिन अगर जवानी ही में तुम्हें क़ब्र में उतार दिया गया तो क्या करोगे?

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> अमल (कुछ करने) की तरफ़ बढ़ो और मौत के अचानक आ जाने से डरो।[2]

न जाने कितने जवान अपनी जवानी में ही अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं और अपने रिश्तेदारों को रोता-बिलकता छोड़कर चले जाते हैं। यह इस बात की निशानी है कि ख़ुदा का क़ानून यानी मौत न बुढ़ापा देखती है और न जवानी, न ग़रीब और न मालदार, न मर्द और न औरत, न ख़ूबसूरत और न बदसूरत।

फ़ारसी में एक मुहावरा है किः

मौत एक ऐसा ऊँट है जो हर घर के सामने बैठा रहता है।

लेकिन समझदारों और नासमझों में फ़र्क़ यह है कि समझदार लोग ख़ुद को आने वाले कल के लिए तैयार करते रहते हैं और अपनी उम्र व जवानी से भरपूर फ़ाएदा उठाते हैं मगर नासमझ अपनी सारी उम्र बर्बाद कर देते हैं और फिर अचानक देखते हैं कि आख़िरी पल आ गया है लेकिन अब कुछ भी नहीं हो सकता और अब तो उम्र की सवारी से उतरना ही उतरना है।

मौत का भेड़िया अचानक आता है और इस रेवड़ से कुछ को उठा ले जाता है। ज़रा इस रेवड़ को देखिए! कितने आराम से चरने में लगा हुआ है।

हज़रत अली[अ०] अपने बेटे इमाम हसन[अ०] को इस तरह समझाते हैंः

> ऐ बेटा! मौत और उस मंज़िल (स्टेज) को हर वक़्त याद रखना चाहिए जिस पर तुम्हें अचानक

> और मौत के बाद पहुँचना है ताकि जब वह आए तो तुम अपने बचाव का सारा सामान तैयार कर चुके हो और इसके लिए अपनी ताक़त मज़बूत कर चुके हो। कहीं ऐसा न हो कि वह अचानक तुम पर टूट पड़े और तुम्हें चारों ख़ाने चित कर दे।[3]

मौत का अचानक आना और बीती हुई उम्र की वापसी की कोई उम्मीद न होना इन्सान को इस बात पर उभार सकता है कि इन्सान फ़ौरन उठे और अपने दिल की गहराईयों से फ़ैसला करे कि अब वह एक ऐसी ज़िन्दगी बिताएगा जिसके बाद अगर मौत भी आ जाए तो कोई पछतावा न हो।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> इस बात की कोई उम्मीद नहीं है कि उम्र का बीता "कल" फिर से पलट आएगा।[4]

इसी लिए अपनी उम्र से अच्छी तरह फ़ाएदा उठाने के लिए सदा मौत की तरफ़ देखते रहना ज़रूरी है और हमेशा यह ध्यान रखने की ज़रूरत है कि टाइम कम और काम बहुत ज़्यादा हैं। वक़्त हाथ से निकल जाने वाला है और हो सकता है कि अचानक हमारी उम्र का धागा टूट जाए और हमें कुछ करने की छूट माँगने पर भी न मिले। इसलिए अभी से कोशिश करना और तैयार रहना चाहिए। मौत के बाद वाले टाइम के लिए जितना हो सके सामान इकट्ठा कर लेना ज़रूरी है।

इस बारे में नहजुल बलाग़ा में इस तरह लिखा हैः

> जिसे मौत का इन्तेज़ार होगा वह नेक कामों में जल्दी करेगा।[5]

ऐसा नहीं है कि मौत की याद और उसके आने का डर आदमी को काहिल, सुस्त और नाउम्मीद बना देता है। नहीं! बल्कि मौत की याद से इन्सान को हिम्मत मिलती है और वह अच्छे अन्दाज़ में और ज़्यादा से ज़्यादा अपनी बाक़ी बची उम्र सही रास्ते पर लगा सकता है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> उन्होंने मौत को पास आता देखकर अच्छे काम करने में जल्दी की।[6]

इसलिए इस बात से मायूसी बिल्कुल नहीं पैदा होती कि,

हमारी ज़िन्दगी बहुत जल्दी ख़त्म हो जाने वाली है बल्कि इससे तो इन्सान के अंदर एक नई ताक़त और नया शौक़ पैदा होता है।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए इमाम अली[अ०] इस तरह फ़रमाते हैं:

> वक़्त अपनी कमान सीधी किए हुए है जिसके तीर ग़लती नहीं करते और न उसके ज़ख़्मों का कोई इलाज हो सकता है। यह ज़िन्दा इन्सान पर मौत के, सेहतमन्द पर बीमारी के और सही-सलामत इन्सान पर ख़तरों के तीर चलाता रहता है। यह ऐसा खाऊ है जिसका पेट कभी भरता ही नहीं है और ऐसा पीने वाला है जिसकी प्यास कभी बुझती ही नहीं है। इससे मिलने वाली मुसीबतों का हाल यह है कि इन्सान माल इकट्ठा करता है लेकिन उसे ख़र्च करना नसीब नहीं होता। घर बनाता है मगर उसमें रह नहीं पाता और फिर अल्लाह की तरफ़ इस तरह चल देता है कि न माल साथ उठाकर ले जा सकता है और न घर ही इधर-उधर ले जा सकता है।[7]

यह जो हज़रत अली[अ०] अपनी नसीहत में फ़रमाते हैं कि-

> गले का फन्दा तँग होने से पहले साँस ले लो।[8]

इसका मतलब यही है कि इससे पहले कि कुछ कर पाने का वक़्त हाथ से निकल जाए और मौत तुम्हें आ दबोचे, उससे पहले ही उठ जाओ और कुछ कर लो।

किसी ने ठीक ही कहा है:

> तुम्हारी ज़िन्दगी के पचास साल तो जा चुके हैं लेकिन तुम अभी तक सो रहे हो। कम से कम बाक़ी बचे हुए कुछ दिन तो अपने क़ब्ज़े में कर लो और हाथ से यूँ ही मत जाने दो।

हमारी उम्र हर दिन घटती जा रही है और हम हर दिन अपनी मौत की तरफ़ बढ़ते जा रहे हैं।

नहजुल बलाग़ा में हज़रत अली[अ०] इस बारे में यह फ़रमाते हैं:

> इन्सान की हर साँस एक क़दम है जो उसे मौत की तरफ़ बढ़ाए लिये जा रहा है।[9]

अफ़सोस कि हर दिन बीतने के साथ-साथ वक़्त कम और ज़िन्दगी छोटी होती जा रही है। इसलिए हमें चाहिए कि हम बहुत तेज़ी और बड़ी मेहनत के साथ अपनी उम्र को फ़ाएदेमन्द बनाएँ और इसे बर्बाद होने से बचा लें। वक़्त सच में बहुत कम है।

1- सूरए अंकबूत/57
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-112
3- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
4- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-112
5- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-3
6- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-112
7- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-114
8- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-90
9- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-74
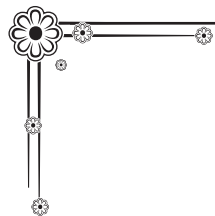
इस सफ़र की तैयारी तो कर लें

इन्सान इस दुनिया में इसलिए आया है ताकि मौत के बाद की सदा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी के लिए ख़ुद को तैयार कर सके। इस दुनिया की ज़िन्दगी मौत के बाद की ज़िंदगी को आबाद करने के लिए है। हमारे सामने एक लम्बा रास्ता है जिसमें दूर-दूर तक ख़तरनाक घाटियाँ और मोड़ हैं। इतना ही नहीं बल्कि एक लम्बे टाइम तक हमें इन ख़तरनाक रास्तों से गुज़रना है। अपनी इस उम्र में हम अपने सफ़र के लिए जितना ज़्यादा सामान इकट्ठा कर लेंगे उतना ही इन ख़तरनाक रास्तों पर चलना हमारे लिए आसान हो जाएगा और हम वहाँ ख़ाली हाथ भी नहीं रहेंगे।

दुनिया में कुछ लोग सिर्फ़ मौज-मस्ती में लगे रहते हैं और कुछ लोग वह हैं जो अभी से अपने आने वाले कल के लिए सामान इकट्ठा करने में जुटे हुए हैं।

नहजुल बलाग़ा में बार-बार इस ख़तरनाक रास्ते में काम आने वाली ज़रूरी चीज़ों और सामान इकट्ठा करने के बारे में बात की गई है। हज़रत अली[अ०] ने अल्लाह के बनाए रास्ते पर चलने वालों से बहुत ज़ोर देकर बार-बार फ़रमाया है कि मौत के बाद के सफ़र के लिए ज़रूरी सामान लेना न भूलना और जहाँ तक हो सके अपनी दुनिया को बाद वाली ज़िंदगी से बदल देना। इमाम फ़रमाते हैं कि तुम्हें इस दुनिया में जो वक़्त मिला है उस से अपनी आने वाली ज़िंदगी को बसाने की कोशिश करो।

हज़रत अली[अ०] बड़े अफ़सोस के साथ इस रास्ते के लम्बा होने और रास्ते के लिए ज़रूरी सामान की कमी की बात करते
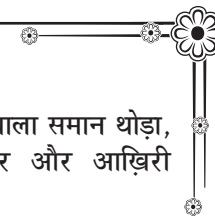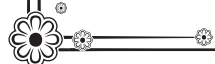
हुए फ़रमाते हैं:

> अफ़सोस! रास्ते में काम आने वाला समान थोड़ा, रास्ता लम्बा, सफ़र घुमावदार और आख़िरी पड़ाव कठिन है।[1]

हज़रत अली[अ०] एक जगह अपने बेटे इमाम हसन[अ०] से फ़रमाते हैं:

> देखो! तुम्हारे सामने एक कठिन और लम्बा रास्ता है जिसके लिए काम आने वाले बेहतरीन सामान की तैयारी अभी से करना होगी और इस सफ़र के लिए जो भी सामान लेकर जाओ उसे हल्का भी होना चाहिए ।[2]

एक और जगह इस तरह फ़रमाते हैं:

> इस सिमट जाने वाली दुनिया से हमेशा बाक़ी रहने वाली दुनिया के लिए अभी से सामान इकट्ठा कर लो।[3]

एक जगह फ़रमाते हैं:

> कोशिश करो और मौत के बाद के सफ़र के लिए तैयार हो जाओ। इस सफ़र के लिए सामान भी अभी से तैयार कर लो।[4]

लेकिन यह ज़रूरी सामान आख़िर है क्या? और दुनिया से इस सफ़र के लिए ज़रूरी सामान कैसे इकट्ठा हो सकता है?

अगर कोई अपनी उम्र ख़ुदा की बन्दगी, वाजिब कामों के करने, हराम कामों से बचने और ज़रूरतमंद लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने में लगा दे तो यही चीज़ें मरने के बाद के ख़तरनाक रास्ते में काम आएंगी। क़यामत में अच्छे काम देखे जाएंगे। यह नहीं पूछा जाएगा कि क्या छोड़कर आए हो बल्कि यह पूछा जाएगा कि क्या लेकर आए हो? वहाँ जिसके अच्छे कामों और तक़्वा (Piousness) का वज़न ज़्यादा होगा उसी का हाथ भरा हुआ होगा और वही फ़ाएदे में होगा। यह वही तक़्वा है जिसे हज़रत अली[अ०] ने मरने के बाद के इस सफ़र का बेहतरीन साथी कहा है।

इमाम अली[अ०] एक ख़ुतबे में क़ब्र में सोए हुए मुर्दों के हालात बताते हुए फ़रमाते हैं:

> अगर इन्हें बात करने की छूट दे दी जाए तो यह
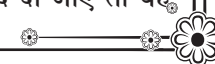
तुम्हें बताएंगे कि इस रास्ते में काम आने वाला बेहतरीन सामान तक़्वा है।[5]

मरने के बाद का यह रास्ता हमारे सामने है। अभी यह भी नहीं पता कि कितना चलना है। उम्र व ज़िन्दगी नाम की जो सवारी हमें दी गई है पता नहीं वह भी किस दिन रूक जाए। साथ में यह भी कि इस सवारी से उतरने की आख़िरी तारीख़ मौत पर जाकर ख़त्म हो जाती है। अगर इन्सान को सही मायनी में इस दुनिया की ज़िन्दगी और बाद की ज़िन्दगी के बारे में पता हो तो वह अच्छे अन्दाज़ में इस लम्बे और ख़तरनाक रास्ते के लिए अपनी इस छोटी सी उम्र में अच्छा-ख़ासा ज़रूरी सामान इकट्ठा कर सकता है।

ख़ास बात यह है कि अगर इन्सान वक़्त की सवारी पर सवार हो जाए तो अपने पूरे कंट्रोल के साथ इस सवारी को आने वाले कल के इस रास्ते में सही से इस्तेमाल कर सकता है। अगर इन्सान ने ऐसा कर लिया फिर तो अपने आख़िरी पड़ाव पर पहुँचने की उम्मीद काफ़ी ज़्यादा है।

इमाम अली[अ०] अपने बेटे इमाम हसन[अ०] के नाम एक ख़त में इस सच्चाई की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं:

तुम्हें पता होना चाहिए कि जो रात और दिन की इस सवारी पर सवार है वह यूँ तो ठहरा हुआ है मगर असल में चल रहा है। यूँ तो एक जगह पर रूका हुआ है मगर रास्ता तय किये जा रहा है।[6]

अगर हम दुनिया को बस एक रास्ता और मरने के बाद की ज़िन्दगी को हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी मान लें तो फिर हम आसानी से अपनी आने वाली ज़िन्दगी के लिए कुछ कर लेंगे।

हज़रत अली[अ०] इसी बात को यूँ फ़रमाते हैं:

ऐ लोगो! यह दुनिया आगे बढ़ जाने की जगह है और आख़िरत ठहर जाने की। इसलिए दुनिया की इस चार दिन की ज़िन्दगी से अपने उस घर के लिए सामान इकट्ठा कर लो जहाँ तुम्हें हमेशा रहना है।[7]

इमाम अली[अ०] अपने सिपाहियों से यह भी कहा करते थे:

अल्लाह तुम पर रहमत करे, हर वक़्त तैयार
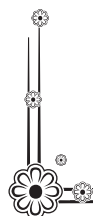
रहो, तुम्हारे बीच आगे बढ़ने की आवाज़ लगाई जा चुकी है, दिल को इस दुनिया से मत जोड़ो, अपने आने वाले वक़्त के लिए अभी से बेहतरीन सामान इकट्ठा कर लो क्योंकि अभी वक़्त तुम्हारे साथ है, अपने आख़िरी पड़ाव की तरफ़ बढ़े चलो, तुम्हारे सामने बड़े कठिन रास्ते और ख़तरनाक हालात हैं जहाँ तुम्हें ज़रूर पहुँचना है और जहाँ तुम्हें ज़रूर ठहरना होगा।

अपनी इस ज़िन्दगी में हम जितना ज़्यादा दीन पर चलेंगे, ख़ुदा की इबादत और अच्छे काम करेंगे उतना ही मरने के बाद के लिए हमारे काम आने वाला बेहतरीन सामान तैयार होता जाएगा। इस ख़तरनाक रास्ते के लिए दीन ने जिन बातों पर ज़्यादा ज़ोर दिया है वह यह हैं:

अपने पैसे से दूसरों की मदद करना, दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करना और ग़रीबों की मदद करना वग़ैरा। सबसे ख़ास बात यह है कि किसी ग़रीब की हर तरह से मदद करना मरने के बाद वाली ज़िन्दगी के लिए एक बहुत बड़ी चीज़ बन जाती है। जब हमें वहाँ पर इसकी ज़रूरत होगी तब यही मदद हमें पलटा दी जाएगी। इस सफ़र के लिए यह भी एक बड़ी अच्छी तैयारी है।

इमाम अली[अ०] इस सच्चाई की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं:

जब ऐसे दुखी और दो रोटी के लिए दूसरों का मुँह तकते लोग मिल जाएँ जो तुम्हारा सामान उठाकर क़यामत में पहुँचा दें और कल जब तुम्हें उसकी ज़रूरत पड़े तो वह तुम्हें वापस दे दें तो इसे बड़ी बात समझो और जितना हो सके अपना सामान ऐसे लोगों की पीठ पर रख दो क्योंकि हो सकता है कि फिर तुम ऐसे लोगों को ढूँढते रहो और वह न मिलें। जो तुम्हारी अमीरी में तुम से क़र्ज़ माँग रहा है इस वादे पर कि तुम्हारे बुरे हालात में तुम्हें वापस कर देगा तो इसे भी एक नेमत समझो।[8]

हज़रत अली[अ०] कहना यह चाहते हैं कि इस दुनिया में जितनी भी ग़रीबों की मदद कर सको करते रहो क्योंकि मरने के

बाद यही मदद हमारे काम आएगी।

किसी ने कहा हैः

> नेकी करो और दरिया में डाल दो। ख़ुदा तुम्हें जंगल में उस नेकी का बदला दे देगा।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-77
2- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
3- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-155
4- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-227
5- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-130
6- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
7- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-201
8- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
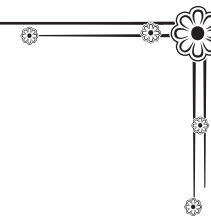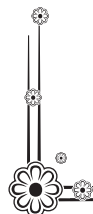
आख़िरी बात

नहजुल बलाग़ा से बहुत सी अच्छी बातें सीखी जा सकती हैं जो अच्छी ज़िन्दगी जीने और इस्लामी हिसाब से कामयाब होने में हमारे काम आ सकती हैं।

इस किताब के आख़िर में हम अमीरुलमोमिनीन[अ०] की एक बड़ी नसीहत यह मान कर पेश कर रहे हैं कि इस नसीहत से हमारी ज़िन्दगी सँवर जाएगी। इस नसीहत के बारे में नहजुल बलाग़ा को तैयार करने वाले मशहूर शिया आलिम सैय्यद रज़ी का कहना है कि अगर पूरी नहजुल बलाग़ा में इस नसीहत से हटकर और कुछ भी न होता तब भी यही एक नसीहत सोचने-समझने वालों के लिए काफ़ी थी।

किसी ने हज़रत अली[अ०] से एक नसीहत करने के लिए कहा तो आपने फ़रमायाः

उन लोगों में से न बनो जो बिना कुछ किए अल्लाह से अच्छा बदला चाहते हैं, जो लम्बी-लम्बी ख़्वाहिशों की वजह से तौबा को टालते रहते हैं, जो दुनिया के बारे में तो दीन की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं लेकिन उनके काम दुनिया की लालच में होते हैं, जिन्हें दुनिया के नाम पर कुछ दे दिया जाए तो उनका दिल नहीं भरता और अगर न दिया जाए तो जो है उस पर गुज़ारा नहीं करते, जो कुछ उनके पास है उसका शुक्र नहीं करते मगर और माँगते रहते हैं, बुराई से लोगों को मना करते हैं लेकिन ख़ुद बुराईयाँ करते रहते हैं, दूसरों को अच्छाईयों का हुक्म देते हैं लेकिन ख़ुद अच्छे काम नहीं करते, जो अच्छे लोगों को पसन्द तो करते हैं लेकिन अच्छों जैसे काम नहीं करते, जो

गुनाहगारों को तो बुरा कहते हैं मगर ख़ुद उन्हीं गुनाहों में घिरे रहते हैं, जो अगर बीमार हो जाएं तो पछताते हैं और जब सेहतमंद हो जाएं तो सब कुछ भूल जाते हैं, अगर हालात अच्छे हों तो आपे से बाहर रहते हैं और जब किसी मुसीबत में फँस जाएं तो मायूस हो जाते हैं, अगर मुसीबत में फँस जाएँ तो आँसुओं के साथ ख़ुदा की तरफ़ मुड़ जाते हैं और जब आराम मिल जाता है तो अकड़ जाते हैं... दूसरों के गुनाह पर जो उनके गुनाहों से कम होता है परेशान रहते हैं और अपने अमल से ज़्यादा अपने लिए सवाब की उम्मीद रखते हैं, जब सब कुछ हाथ में होता है तो गुनाहों में डूब जाते हैं और जब खाली हाथ होते हैं तो मायूसी और सुस्ती दिखाते हैं, काम कम करते हैं मगर और माँगने में ज़िद करते हैं, अगर दुनिया सामने आ जाए तो गुनाह पहले करते हैं और तौबा को बाद पर टाल देते हैं, अगर कठिन हालात हों तो दीन से दूर भाग जाते हैं, सीख लेने की बातें तो करते हैं लेकिन ख़ुद सीख नहीं लेते, दूसरों को ख़ूब नसीहतें करते हैं लेकिन ख़ुद नसीहत नहीं लेते, बोलते बहुत हैं और काम बहुत कम करते हैं, मिट जाने वाली चीज़ों में आगे-आगे रहते हैं और बाक़ी रहने वाली चीज़ों में पीछे रह जाते हैं, फ़ायदे को नुक़सान और नुक़सान को फ़ायदा समझते हैं, मौत से डरे हुए रहते हैं, हाथ आया वक़्त गंवा देते हैं, दूसरों के गुनाह को बड़ा और अपने उसी गुनाह को छोटा समझते हैं, अपनी दीनदारी को बहुत और दूसरों की दीनदारी को कम आँकते हैं, लोगों पर ताने मारते हैं लेकिन अपने मामले में ख़ुद से समझौता कर लेते हैं, ग़रीबों के साथ बैठकर अल्लाह की बातें करने से ज़्यादा अमीरों के साथ मौज-मस्ती में लगे रहते हैं, दूसरों के ख़िलाफ़ अपने फ़ायदे में फ़ैसला कर लेते हैं लेकिन दूसरों के फ़ायदे में अपने नुक़सान का कोई फ़ैसला नहीं करते, दूसरों को रास्ता दिखाते हैं लेकिन ख़ुद ही रास्ते से भटक जाते हैं, दूसरे उनकी बात मानते हैं लेकिन वह ख़ुद किसी की बात नहीं मानते, अपना हक़ पूरा माँगते हैं लेकिन दूसरों का हक़ पूरा नहीं देते, लोगों से डरते हैं लेकिन ख़ुदा से नहीं डरते।[1]

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-150